5 जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ प्रतिभा थे। द्विवेदी-युग की स्थूल और इतिवृत्तात्मक कविता-धारा को सूक्ष्म भाव-सौन्दर्य, रमणीयता एवं माधुर्य से परिपूर्ण कर प्रसादजी ने नवयुग का सूत्रपात किया। ये छायावाद के प्रवर्तक, उन्नायक तथा प्रतिनिधि कवि होने के साथ ही नाटककार एवं कहानीकार भी रहे।

प्रसादजी का जन्म 30 जनवरी, 1889 ई० में काशी के सुँघनी साहू नामक प्रसिद्ध वैश्य परिवार में हुआ था। छोटी अवस्था में ही पिता तथा बड़े भाई के देहान्त हो जाने के कारण इनका शिक्षा-क्रम शीघ्र ही टूट गया। गृह के व्यापार को सँभालते हुए भी इन्होंने स्वाध्याय पर विशेष ध्यान रखा। घर पर ही इन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, फारसी का गहन अध्ययन किया। परिवारजनों की मृत्यु, अर्थ-संकट, पत्नी-वियोग आदि संघर्षों को अत्यन्त जीवट से झेलता हुआ यह अलौकिक प्रतिभासम्पन्न युगस्रष्टा साहित्यकार हिन्दी के मन्दिर में अपूर्व गन्धमय रचना-सुमन अर्पित करता रहा। 14 जनवरी, 1937 ई० में इनका रोग-जर्जर शरीर निष्प्राण होकर हिन्दी-साहित्य के एक अध्याय का पटाक्षेप कर गया।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म—** 30-01-1889 ई०।
- **जन्म-स्थान—**काशी।
- **पिता—**देवीप्रसाद।
- छायावाद के प्रवर्तक।
- **लेखन विधा :** काव्य, नाटक, उपन्यास, निबन्ध।
- **भाषा :** संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली।
- **शैली :** प्रबन्ध काव्य एवं मुक्तक।
- **प्रमुख रचनाएँ—**कामायनी, आँसू, लहर, झरना, चित्राधार, कानन-कुसुम, प्रेम पथिक।
- **मृत्यु–**14-01-1937 ई०।

'चित्राधार', 'कानन-कुसुम', 'झरना', 'लहर', 'प्रेम पथिक', 'आँसू', 'कामायनी' आदि प्रसादजी की प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं। **'कामायनी'** हिन्दी काव्य का गौरव-ग्रन्थ है। **'राज्यश्री', 'विशाख', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'अजातशत्रु', 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी'** आदि उनके उत्कृष्ट नाटक हैं। अनेक कहानी-संग्रह, कई उपन्यास तथा निबन्धों की रचना करके प्रसादजी ने अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा का प्रसाद हिन्दी को प्रदान किया।

प्रसादजी का दृष्टिकोण विशुद्ध मानवीय रहा है। उसमें आध्यात्मिक आनन्दवाद की प्रतिष्ठा है। ये जीवन की चिरन्तन समस्याओं का कोई चिरन्तन माननीय समाधान खोजना चाहते थे। इच्छा, ज्ञान और क्रिया का सामंजस्य ही उच्च मानवता है। उसी की प्रतिष्ठा प्रसादजी ने की है। प्रवृत्ति और निवृत्ति का यह समन्वय ही भारतीय संस्कृति की अनुपम देन है और 'कामायनी' के माध्यम से यही सन्देश प्रसादजी ने सम्पूर्ण मानवता को दिया।

प्रसादजी की प्रारम्भिक रचनाओं में ही, संकोच और झिझक होते हुए भी कुछ कहने को आकुल चेतना के दर्शन होते हैं। 'चित्राधार' में ये प्रकृति की रमणीयता और माधुर्य पर मुग्ध हैं। 'प्रेम पथिक' में प्रकृति की पृष्ठभूमि में कवि-हृदय में मानव-

सौन्दर्य के प्रति जिज्ञासा का भाव जागता है। इनकी कविता में माधुर्य तथा पद-लालित्य भरा है। माधुर्य-पक्ष की ओर स्वभावतः इनकी प्रवृत्ति होने से रहस्य-भावना में भी वही संयोग-वियोग वाली भावनाएँ व्यक्त हुई हैं। 'आँसू' प्रसाद जी का उत्कृष्ट, गम्भीर, विशुद्ध मानवीय विरह काव्य है, जो प्रेम के स्वर्गीय रूप का प्रभाव छोड़ता है, इसीलिए कुछ लोग इसे आध्यात्मिक विरह का काव्य मानने का आग्रह करते हैं। 'कामायनी' प्रसाद-काव्य की सिद्धावस्था है, उनकी काव्य-साधना का पूर्ण परिपाक है। कवि ने मनु और श्रद्धा के बहाने पुरुष और नारी के शाश्वत स्वरूप एवं मानव के मूल मनोभावों का काव्यगत चित्र अंकित किया है। काव्य, दर्शन और मनोविज्ञान की त्रिवेणी 'कामायनी' निश्चय ही आधुनिक काल की सर्वोत्कृष्ट सांस्कृतिक रचना है।

प्रसादजी छायावादी कवि थे। प्रेम और सौन्दर्य उनके काव्य का प्रधान विषय है। मानवीय संवेदना उसका प्राण है। प्रकृति को सचेतन अनुभव करते हुए उसके पीछे परम सत्ता का आभास कवि ने सर्वत्र किया है। यही उनका रहस्यवाद है। प्रसाद का रहस्यवाद साधनात्मक नहीं है। वह भाव-सौन्दर्य से संचालित प्रकृति का रहस्यवाद है। अनुभूति की तीव्रता, वेदना, कल्पना-प्रणवता आदि प्रसाद-काव्य की कतिपय अन्य विशेषताएँ हैं।

प्रसादजी ने काव्य-भाषा के क्षेत्र में भी युगान्तर उपस्थित किया है। द्विवेदी युग की अभिधा-प्रधान भाषा और इतिवृत्तात्मक शैली के स्थान पर प्रसादजी ने भावानुकूल चित्रोपम शब्दों का प्रयोग किया है। लाक्षणिकता और प्रतीकात्मकता से युक्त प्रसादजी की भाषा में अद्‌भुत नाद-सौन्दर्य और ध्वन्यात्मकता है। चित्रात्मक भाषा में संगीतमय चित्र अंकित किये हैं। प्रसादजी ने प्रबन्ध तथा गीति-काव्य दोनों रूपों में समान अधिकार से श्रेष्ठ काव्य-रचना की है। 'लहर', 'झरना' आदि उनकी मुक्तक काव्य-रचनाएँ हैं। प्रबन्ध-काव्यों में 'कामायनी' जैसा रत्न इन्होंने दिया है।

प्रसादजी का काव्य अलंकारों की दृष्टि से भी अत्यन्त समृद्ध है। प्रायः सादृश्यमूलक अर्थालंकारों में ही प्रसादजी की वृत्ति अधिक रमी है। परम्परागत अलंकारों को ग्रहण करते हुए भी प्रसादजी ने नवीन उपमानों का प्रयोग करके उन्हें नयी भंगिमा प्रदान की है। अमूर्त उपमान-विधान उनकी विशेषता है। मानवीकरण, ध्वन्यार्थ व्यंजना, विशेषण-विपर्यय जैसे पाश्चात्य प्रभाव से ग्रहीत आधुनिक अलंकारों के भी सुन्दर प्रयोग प्रसादजी की रचनाओं में मिलते हैं। विविध छन्दों का प्रयोग और नवीन छन्दों की उद्‌भावना भी प्रसादजी ने की है। वस्तुतः प्रसादजी का साहित्य अनन्त वैभव-सम्पन्न है।

गीत

बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही-
तारा-घट ऊषा-नागरी।

खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लायी-
मधु-मुकुल नवल-रस गागरी।

अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये-
तू अब तक सोयी है आली!
आँखों में भरे विहाग री।।

('लहर' से)

श्रद्धा-मनु

[प्रसादजी ने 'कामायनी' में देव संस्कृति के विनाश के बाद विकसित होनेवाली मानव-संस्कृति एवं मानवता के विकास की मनोवैज्ञानिक कहानी प्रस्तुत की है। यह विकास श्रद्धा और मनु के योग से हुआ है। प्रस्तुत स्थल श्रद्धा और मनु के प्रथम दर्शन एवं परस्पर सहज आकर्षण के वर्णन से आरम्भ होता है। इसमें श्रद्धा के रूप तथा शील का चित्रण है। अन्तिम भाग में श्रद्धा मनु अर्थात् मानव को जीवन का सन्देश दे रही है।]

"कौन तुम? संसृति-जलनिधि तीर
तरंगों से फेंकी मणि एक;
कर रहे निर्जन का चुपचाप
प्रभा की धारा से अभिषेक?

मधुर विश्रान्त और एकान्त-
जगत का सुलझा हुआ रहस्य;
एक करुणामय सुन्दर मौन
और चंचल मन का आलस्य!"
सुना यह मनु ने मधु गुंजार
मधुकरी का-सा जब सानंद,
किये मुख नीचा कमल समान
प्रथम कवि का ज्यों सुन्दर छंद।

एक झटका सा लगा सहर्ष,
निरखने लगे लुटे से, कौन-
गा रहा यह सुन्दर संगीत?
कुतूहल रह न सका फिर मौन।

और देखा वह सुन्दर दृश्य
नयन का इंद्रजाल अभिराम;
कुसुम-वैभव में लता समान
चंद्रिका से लिपटा घनश्याम;

हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लम्बी काया, उन्मुक्त;
मधु पवन क्रीड़ित ज्यों शिशु साल
सुशोभित हो सौरभ संयुक्त।

मसृण गांधार देश के, नील
रोम वाले मेषों के चर्म,
ढक रहे थे उसका वपु कांत
बन रहा था वह कोमल वर्म।

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ-बन बीच गुलाबी रंग।

ओह! वह मुख! पश्चिम के व्योम-
बीच जब घिरते हों घन श्याम;
अरुण रवि मंडल उनको भेद
दिखाई देता हो छविधाम!

घिर रहे थे घुँघराले बाल
अंश अवलंबित मुख के पास;
नील घन-शावक-से सुकुमार
सुधा भरने को विधु के पास।
और मुख पर वह मुसक्यान
रक्त किसलय पर ले विश्राम;
अरुण की एक किरण अम्लान
अधिक अलसाई हो अभिराम।

कहा मनु ने, "नभ धरणी बीच
बना जीवन रहस्य निरुपाय;
एक उल्का सा जलता भ्रांत,
शून्य में फिरता है असहाय।"

'कौन हो तुम वसंत के दूत
बिरस पतझड़ में अति सुकुमार;
घन तिमिर में चपला की रेख
तपन में शीतल मंद बयार!'

लगा कहने आगंतुक व्यक्ति
मिटाता उत्कंठा सविशेष;
दे रहा हो कोकिल सानन्द
सुमन को ज्यों मधुमय सन्देश-

"भरा था मन में नव उत्साह
सीख लूँ ललित कला का ज्ञान;

इधर रह गंधर्वों के देश
पिता की हूँ प्यारी संतान।

दृष्टि जब जाती हिम-गिरि ओर
प्रश्न करता मन अधिक अधीर;
धरा की यह सिकुड़न भयभीत
आह कैसी है? क्या है पीर?

बढ़ा मन और चले ये पैर
शैल मालाओं का शृंगार;
आँख की भूख मिटी यह देख
आह कितना सुन्दर सम्भार।

यहाँ देखा कुछ बलि का अन्न
भूत-हित-रत किसका यह दान!
इधर कोई है अभी सजीव,
हुआ ऐसा मन में अनुमान।
तपस्वी! क्यों इतने हो क्लांत,
वेदना का यह कैसा वेग?
आह! तुम कितने अधिक हताश
बताओ यह कैसा उद्वेग?

दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।

जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाओ भूल।''

लगे कहने मनु सहित विषाद–
''मधुर मारुत से ये उच्छ्वास;
अधिक उत्साह तरंग अबाध
उठाते मानस में सविलास।

किंतु जीवन कितना निरुपाय!
लिया है देख नहीं संदेश;
निराशा है जिसका परिणाम
सफलता का वह कल्पित गेह।''

कहा आगंतुक ने सस्नेह—
''अरे, तुम इतने हुए अधीर;
हार बैठे जीवन का दाँव
जीतते मर कर जिसको वीर।

तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद;
तरल आकाश से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।

प्रकृति के यौवन का शृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल;
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र
आह उत्सुक है उनकी धूल।

एक तुम, यह विस्तृत भू खंड
प्रकृति वैभव से भरा अमंद;
कर्म का भोग, भोग का कर्म
यही जड़ का चेतन आनंद।

अकेले तुम कैसे असहाय
यजन कर सकते? तुच्छ विचार;
तपस्वी! आकर्षण से हीन
कर सके नहीं आत्म विस्तार।

समर्पण लो सेवा का सार
सजल संसृति का यह पतवार;
आज से यह जीवन उत्सर्ग,
इसी पद तल में विगत विकार।

बनो संसृति के मूल रहस्य
तुम्हीं से फैलेगी वह बेल;
विश्व भर सौरभ से भर जाय
सुमन के खेलो सुन्दर खेल।

और यह क्या तुम सुनते नहीं
विधाता का मंगल वरदान-
'शक्तिशाली हो, विजयी बनो'
विश्व में गूँज रहा, जय गान।
डरो मत अरे अमृत संतान
अग्रसर है मंगलमय वृद्धि;
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र
खिंची आवेगी सकल समृद्धि!

विधाता की कल्याणी सृष्टि
सफल हो इस भूतल पर पूर्ण;
पटें सागर, बिखरे ग्रह-पुंज
और ज्वालामुखियाँ हों चूर्ण।

उन्हें चिनगारी सदृश सदर्प
कुचलती रहे खड़ी सानन्द;
आज से मानवता की कीर्ति
अनिल, भू, जल में रहे न बंद।

जलधि के फूटें कितने उत्स
द्वीप, कच्छप डूबें-उतराय;
किंतु वह खड़ी रहे दृढ़ मूर्ति
अभ्युदय का कर रही उपाय।

शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय;
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय।''

('कामायनी' से)

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(गीत)

(क) बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही-
तारा-घट ऊषा-नागरी।
खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लायी-
मधु-मुकुल नवल-रस गागरी।
अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये–
तू अब तक सोयी है आली!
आँखों में भरे विहाग री।। **[2019 CP]**

प्रश्न– (i) पाठ का शीर्षक तथा कवि का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) इस कविता में कौन-सा अलंकार है?
(iv) इस काव्यांश में किस समय का वर्णन है?
(v) प्रभात के वर्णन में क्या-क्या कहा गया है?
(vi) 'आँखों में भरे बिहाग री' से क्या तात्पर्य है?

(श्रद्धा-मनु)

(ख) नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ-बन बीच गुलाबी रंग।

ओह! वह मुख! पश्चिम के व्योम-
बीच जब घिरते हों घन श्याम;

अरुण रवि मंडल उनको भेद
दिखाई देता हो छविधाम! **[2019 CO]**

प्रश्न– (i) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) उपर्युक्त कविता में किसके रूप का वर्णन है?
(iii) 'बिजली के फूल' से क्या तात्पर्य है?
(iv) उपर्युक्त में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।

जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाओ भूल। **[2020 ZB]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) श्रद्धा किसके हताश मन को प्रेरणा दे रही है?
(iii) इस पद्यांश में किस प्रसंग का वर्णन है?
(iv) 'एक परदा यह झीना नील' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।
(vi) सुख का नवल प्रभात क्यों विकसता है?
(vii) दुःख और सुख के बीच की दूरी को कवि ने किससे व्यक्त किया है?
(viii) नवल प्रभात किसका प्रतीक है?

(घ) एक तुम, यह विस्तृत भू खंड
प्रकृति वैभव से भरा अमंद;
कर्म का भोग, भोग का कर्म
यही जड़ का चेतन आनंद।

अकेले तुम कैसे असहाय
यजन कर सकते? तुच्छ विचार;
तपस्वी! आकर्षण से हीन
कर सके नहीं आत्म विस्तार।

प्रश्न– (i) प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) संसार में सभी जड़-चेतन किससे परिपूर्ण हैं?
(iii) इस पद्यांश का प्रसंग क्या है?
(iv) 'प्रकृति वैभव से भरा अमंद' इस पंक्ति का क्या अर्थ है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ङ) और यह क्या तुम सुनते नहीं
विधाता का मंगल वरदान-
'शक्तिशाली हो, विजयी बनो'
विश्व में गूँज रहा, जय गान।
डरो मत अरे अमृत संतान

अग्रसर है मंगलमय वृद्धि;
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र
खिंची आवेगी सकल समृद्धि!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) किसका विजयगान विश्वभर में गूँज रहा है?
(iii) इस पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?
(iv) इस पद्यांश का प्रसंग लिखिए।
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(च) जलधि के फूटें कितने उत्स द्वीप-कच्छप डूबे उतराय;
किन्तु वह खड़ी रहे दृढ़ मूर्ति अभ्युदय का कर रही उपाय।
शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय,
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय। **[2020 ZJ]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि और कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) श्रद्धा ने मनु को किस प्रकार मानवता का साम्राज्य स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है?
(iv) सम्पूर्ण सृष्टि की रचना किनसे हुई है?
(v) श्रद्धा ने मनु को कौन-सी बात बतायी है?
(vi) दृढ़ मूर्ति से आशय किसकी मूर्ति से है
(vii) 'उत्स' और 'अभ्युदय' शब्दों का अर्थ लिखिए।
(viii) द्वीप-कच्छप में कौन-सा अलंकार है?

(छ) समर्पण लो सेवा का सार
सजल संसृति का यह पतवार;
आज से यह जीवन उत्सर्ग
इसी पद तल में विगत विकार।
बनो संसृति के मूल रहस्य
तुम्हीं से फैलेगी वह बेल;
विश्व भर सौरभ से भर जाय
सुमन के खेलो सुन्दर खेल। **[2019 CR, CX]**

प्रश्न– (i) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम बताइये।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) श्रद्धा मनु को क्या संदेश देना चाहती है?
(iv) 'सुमन के खेलो सुन्दर खेल' का भाव स्पष्ट कीजिए।
(v) सृष्टि का क्रम चलाने के लिए वह क्या कहती है?
(vi) 'समर्पण लो सेवा का सार' किसने किससे कहा है?
(vii) 'बनो संसृति के मूल रहस्य' किसके लिए कहा गया है?
(viii) 'विश्वभर सौरभ से भर जाय' का क्या आशय है?

(ज) तपस्वी ! क्यों हो, इतने क्लान्त
वेदना का कैसा यह वेग?
आह ! तुम कितने, अधिक हताश,
बताओ यह कैसा उद्वेग? **[2020 ZA]**

प्रश्न– (i) इसमें 'तपस्वी' किसके लिए कहा गया है?
(ii) यह उद्बोधन किसके द्वारा व्यक्त किया गया है?
(iii) 'हताश' और 'क्लान्त' शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(iv) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(v) कविता का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।

(झ) कौन हो तुम वसंत के दूत
विरस पतझड़ में अति सुकुमार,
घन तिमिर में चपला की रेख
तपन में शीतल मंद बयार।
लगा कहने आगंतुक व्यक्ति
मिटाता उत्कंठा सविशेष,
दे रहा हो कोकिल सानन्द
सुमन को ज्यों मधुमय सन्देश। **[2020 ZK]**

प्रश्न– (i) पाठ का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।
(ii) आगन्तुक व्यक्ति से किसकी ओर संकेत किया गया है?
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iv) पद्यांश में किस पात्र की उत्कंठा मिटाने की बात कही गयी है?
(v) पद्यांश में किन पात्रों के बीच संवाद हो रहा है?

(ञ) घिर रहे थे घुँघराले बाल
अंश अवलम्बित मुख के पास;
नील घन शावक-से सुकुमार
सुधा भरने को विधु के पास।
और मुख पर वह मृदु मुसकान
रक्त किसलय पर ले विश्राम;
अरुण की एक किरण अम्लान
अधिक अलसाई हो अभिराम। **[2020 ZN]**

प्रश्न– (i) यह179ँ किसकी सुन्दरता का मनोरम वर्णन किया है?
(ii) अरुण की एक किरण अम्लान अधिक अलसाई हो अभिराम में कौन-सा अलंकार है?
(iii) अम्लान तथा अभिराम शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(iv) रेखांकित अंश का भावार्थ लिखिए।
(v) उपर्युक्त कविता का शीर्षक तथा कवि का नाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) दुःख की पिछली रजनी बीच, विकसता सुख का नवल प्रभात।
(ख) प्रकृति के यौवन का शृंगार, करेंगे कभी न बासी फूल।
(ग) हार बैठे जीवन का दाँव, जीतते जिसको मरकर वीर।
(घ) तप नहीं केवल जीवन सत्य।
(ङ) बस गयी एक बस्ती है स्मृतियों की इसी हृदय में।
(च) इस करुणा-कलित हृदय में, अब विकल रागिनी बजती।
(छ) कर्म का भोग, भोग का कर्म, यही जड़ का चेतन आनन्द।

(ज) डरो मत अरे, अमृत संतान।

(झ) 'शक्तिशाली हो विजयी बनो' विश्व में गूँज रहा, जयगान।

(ञ) किन्तु जीवन कितना...........कल्पित गेह।

(ट) कुसुम वैभव में लता समान चन्द्रिका से लिपटा घनश्याम।

2. जयशंकर प्रसाद का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **[2016 SG, 17 MA]**

अथवा

जयशंकर प्रसाद का संक्षिप्त जीवन-परिचय दीजिए।

अथवा

जयशंकर प्रसाद का जीवन-परिचय देते हुए उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

[2016 SA, SC, SD, 17 MA, MC, MF, 19 CL, CN, CQ, 20 ZA, ZC, ZD, ZF, ZI, ZK, ZM]

अथवा

जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।

3. जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
4. जयशंकर प्रसाद का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए।
5. ''प्रसाद के काव्य में सौन्दर्यमूलक छायावाद के दर्शन होते हैं।'' इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।
6. गीत के क्या लक्षण हैं? गीत की कसौटी पर 'बीती विभावरी जाग री' की विशेषताओं का विवेचन कीजिए।
7. श्रद्धा का मनु से मिलन किन परिस्थितियों में दिखाया गया है?
8. श्रद्धा और मनु के प्रथम मिलन का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
9. ''जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं।'' समीक्षा कीजिए।
10. श्रद्धा और मनु के संवाद से प्रसादजी ने जीवन का क्या सन्देश दिया है? स्पष्ट कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रद्धा-मनु सर्ग का सन्देश क्या है?
2. एक महान् छायावादी कवि के रूप में प्रसाद की उपलब्धियों की सूची बनाइए।
3. ''प्रसाद की कामायनी एक कालजयी रचना है।'' स्पष्ट कीजिए।
4. प्रसाद के 'श्रद्धा-मनु' प्रसंग को अपने शब्दों में लिखिए।
5. 'श्रद्धा-मनु' कविता के आधार पर श्रद्धा के रूप सौन्दर्य का निरूपण कीजिए।
6. 'प्रसाद' आँसू में जी भरकर रोए हैं।'' इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।
7. 'बीती विभावरी जाग री' इस गीत का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में काव्य-सौष्ठव स्पष्ट कीजिए—

   (क) बीती विभावरी जाग री।

   (ख) प्रकृति के यौवन का शृंगार, करेंगे कभी न बासी फूल।
2. मानवीकरण का क्या तात्पर्य है? संकलित अंशों में मानवीकरण के कुछ उदाहरण चुनकर उनकी व्याख्या कीजिए।